3 'जलसत्याग्रह' खत्म, सशर्त आंदोलन वापस

5 संगठनात्मक दक्षता और संवाद कौशल के धनी

6 परमाणु युद्ध में न बदल जाए होर्मुज का टकराव

RNI-MPBIL/2011/39805 DAVP/134083/25

निष्पक्ष और निर्भीक साप्ताहिक

जगत प्रवाह

वर्ष : 16 अंक : 50 प्रति सोमवार, 20 अप्रैल 2026 मूल्य : दो रुपये पृष्ठ : 8

आखिर कब होगी दोषियों पर कार्रवाई?

उद्योग विभाग की उदासीनता और मंत्री लखनलाल देवांगन के कारण हुआ वेदांता कंपनी में हादसा

कवर स्टोरी

-विजया पाठक
एडिटर

छत्तीसगढ़ में वेदांता कंपनी में हुए हालिया हादसे ने एक बार फिर औद्योगिक सुरक्षा, प्रशासनिक जवाबदेही और मानव जीवन के मूल्य जैसे गंभीर सवालों को केंद्र में ला खड़ा किया है। यह घटना सिर्फ एक औद्योगिक दुर्घटना भर नहीं है, बल्कि यह उस व्यवस्था की विफलता का आईना है, जिसमें लापरवाही, उदासीनता और जवाबदेही के अभाव ने मिलकर निर्दोष मजदूरों की जान ले ली। सबसे बड़ा सवाल यही है कि आखिर इस हादसे के लिए जिम्मेदार कौन है? क्या केवल कंपनी प्रबंधन को दोषी ठहराना पर्याप्त होगा, या फिर इसके पीछे प्रशासनिक तंत्र की भी बराबर की भूमिका है? जब किसी उद्योग में इस प्रकार की दुर्घटना होती है, तो यह मान लेना गलत होगा कि यह

अचानक घटित हुई घटना है। इसके पीछे लंबे समय से चली आ रही लापरवाही, सुरक्षा मानकों की अनदेखी और निरीक्षण तंत्र की निष्क्रियता छिपी होती है। वेदांता जैसी बड़ी कंपनी से यह अपेक्षा की जाती है कि वह अंतरराष्ट्रीय स्तर के सुरक्षा मानकों का पालन करेगी। लेकिन इस हादसे ने यह स्पष्ट कर दिया कि कागजों पर दर्ज नियम और वास्तविकता के बीच गहरी खाई है। सवाल उठता है कि क्या कंपनी के भीतर नियमित सुरक्षा ऑडिट हो रहे थे? क्या मजदूरों को पर्याप्त सुरक्षा उपकरण दिए गए थे? और सबसे महत्वपूर्ण, क्या पहले से मौजूद खामियों की जानकारी होते हुए भी उन्हें नजरअंदाज किया गया? दूसरी ओर, राज्य सरकार की भूमिका भी कटघरे में है। किसी भी औद्योगिक इकाई की निगरानी और सुरक्षा सुनिश्चित करने की जिम्मेदारी केवल कंपनी की नहीं होती, बल्कि सरकार के संबंधित विभागों की भी होती है। यदि समय-समय पर निरीक्षण होते और नियमों का सख्ती से पालन कराया जाता, तो शायद यह हादसा टल सकता था। (शेष पेज 2 पर)

छत्तीसगढ़ में सुशासन की नई इबारत, साय का उभरता प्रभाव

किसान, महिला सबके विकास का दौर

-विजया पाठक

छत्तीसगढ़ की हरित वादियों और सांस्कृतिक समृद्धि के बीच बसे जशपुर जिले के ग्राम बगिया से निकलकर राज्य की राजनीति के शिखर तक पहुँचे विष्णुदेव साय आज एक ऐसे जननेता के रूप में स्थापित हैं, जिनकी पहचान केवल एक प्रशासक की नहीं, बल्कि संवेदनशील और जमीनी नेतृत्व के प्रतीक के रूप में होती है। साय ने अपने दो वर्ष के मुख्यमंत्रित्व काल में जिस प्रकार विकास, जनकल्याण और सुशासन का समन्वय प्रस्तुत किया है, उसने उन्हें प्रदेश की जनता के बीच विशेष लोकप्रियता दिलाई है। आदिवासी पृष्ठभूमि से आने वाले साय का

जीवन संघर्ष, सादगी और सेवा की भावना से परिपूर्ण रहा है। यही कारण है कि उनके निर्णयों में आमजन, विशेषकर ग्रामीण और वंचित वर्ग की झलक स्पष्ट दिखाई देती है। वे केवल नीतियाँ बनाने तक सीमित नहीं रहते, बल्कि उन्हें जमीनी स्तर पर लागू करने की प्रतिबद्धता भी दिखाते हैं। यही गुण उन्हें अन्य नेताओं से अलग बनाता है।

साय सरकार के उल्लेखनीय निर्णय

कृषि प्रधान राज्य छत्तीसगढ़ में किसानों की स्थिति को सुदृढ़ करने के लिए साय सरकार द्वारा लिए गए निर्णय विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। केबिनेट बैठक में समर्थन मूल्य पर धान बेचने वाले किसानों को 3100 रुपये प्रति क्विंटल के मान से अंतर की राशि होली से पहले एकमुश्त देने का निर्णय न केवल आर्थिक राहत प्रदान करता है, बल्कि सरकार की संवेदनशीलता को भी दर्शाता है।

(शेष पेज 3 पर)

राज्यसभा की राह पर कमलनाथ, क्या कांग्रेस खेलेगी मास्टर स्ट्रोक?

क्या क्रॉस वोटिंग के डर के बीच कांग्रेस का भरोसा होंगे नाथ?

-विजया पाठक

मध्यप्रदेश की राजनीति इन दिनों एक बार फिर नई करवट लेने को आतुर दिखाई दे रही है। सत्ता और रणनीति के गलियारों में राज्यसभा चुनाव की आहट ने हलचल तेज कर दी है। मई-जून 2026 में प्रस्तावित तीन सीटों के चुनाव को लेकर राजनीतिक दल अपने-अपने समीकरण साधने में जुट गए हैं। इसी कड़ी में कांग्रेस का ध्यान एक ऐसे चेहरे पर टिक गया है, जो अनुभव, संतुलन और संगठन तीनों का संगम माना जाता है। यह नाम है पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ का, जो एक बार फिर राष्ट्रीय राजनीति की ओर बढ़ते नजर आ रहे हैं विधानसभा चुनाव 2023 के बाद कांग्रेस के पास 65 विधायकों की ताकत थी, लेकिन वर्तमान परिस्थितियों में यह संख्या

62 के आसपास सिमट गई है। राज्यसभा की एक सीट जीतने के लिए 58 विधायकों का समर्थन आवश्यक है, जो कांग्रेस के पास है। हालांकि, यह गणित जितना सरल दिखाई देता है, उतना है नहीं। हरियाणा और ओडिशा जैसे राज्यों में हुए क्रॉस वोटिंग के अनुभव ने कांग्रेस को सतर्क कर दिया है। ऐसे में पार्टी किसी भी प्रकार का जोखिम उठाने के मूड में नहीं है। यहीं पर कमलनाथ का नाम सबसे भरोसेमंद विकल्प के रूप में उभरता है। उन्हें 'मैनेजमेंट का माहिर' माना जाता है ऐसा नेता जो न केवल अपने विधायकों को एकजुट रख सकता है, बल्कि विरोधी खेमे की चालों को भी निष्प्रभावी करने की क्षमता रखता है।

(शेष पेज 2 पर)

राज्यसभा की राह पर कमलनाथ, क्या कांग्रेस खेलेगी मास्टर स्ट्रोक?

(पेज 1 का शेष)

अनुभव की पूंजी

मध्यप्रदेश की राजनीति में कमलनाथ का कद केवल एक नेता का नहीं, बल्कि एक संस्थान का है। दशकों की सक्रिय राजनीति, केंद्र में महत्वपूर्ण मंत्रालयों की जिम्मेदारी और संगठन पर मजबूत पकड़। ये सभी गुण उन्हें एक विशिष्ट पहचान देते हैं। वे ऐसे नेता हैं, जिनकी स्वीकार्यता पार्टी के भीतर लगभग सर्वसम्मत है। कांग्रेस के सामने सबसे बड़ी चुनौती यही है कि वह ऐसा उम्मीदवार चुने, जिस पर सभी विधायक एकमत हों। इस कसौटी पर कमलनाथ खरे उतरते दिखाई देते हैं। यही कारण है कि पार्टी का शीर्ष नेतृत्व भी उनके नाम को लेकर आश्वस्त नजर आता है।

2028 की बिसात पर मास्टर स्ट्रोक

यदि इस निर्णय को व्यापक परिप्रेक्ष्य में देखा जाए, तो यह केवल राज्यसभा सीट तक सीमित नहीं है। दरअसल, यह 2028 के विधानसभा चुनावों की रणनीति का भी अहम हिस्सा हो सकता है। कमलनाथ को राज्यसभा भेजना कांग्रेस के लिए एक "मास्टर स्ट्रोक" साबित हो सकता है बशर्ते इसे सही तरीके से लागू किया जाए। कमलनाथ का अनुभव चुनावी प्रबंधन, उम्मीदवार चयन और राजनीतिक गठबंधनों के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। वे भले ही राज्यसभा में हों, लेकिन प्रदेश की राजनीति पर उनका प्रभाव कम नहीं होगा। बल्कि, राष्ट्रीय स्तर पर रहते हुए वे एक रणनीतिक मार्गदर्शक की भूमिका निभा सकते हैं। इसके साथ ही

यह निर्णय पार्टी के भीतर गुटबाजी को कम करने में भी सहायक हो सकता है। यदि जिम्मेदारियों का संतुलित वितरण किया जाए, तो संगठन अधिक एकजुट होकर आगे बढ़ सकता है।

संगठन और संदेश का संतुलन

कमलनाथ को राज्यसभा भेजना केवल एक राजनीतिक निर्णय नहीं, बल्कि एक संदेश भी होगा कि कांग्रेस अपने अनुभवी नेताओं को सम्मान और जिम्मेदारी देने में विश्वास रखती है। इससे पार्टी के वरिष्ठ नेताओं का मनोबल बढ़ेगा, वहीं युवा कार्यकर्ताओं को भी प्रेरणा मिलेगी। हालांकि, इस निर्णय के साथ कुछ चुनौतियाँ भी जुड़ी हैं। सबसे बड़ी चुनौती होगी प्रदेश में नेतृत्व का संतुलन बनाए रखना। कमलनाथ के राज्यसभा जाने के बाद कांग्रेस को यह सुनिश्चित करना होगा कि प्रदेश में एक सक्षम और प्रभावी नेतृत्व तैयार रहे, जो संगठनात्मक गतिविधियों को गति दे सके।

एक अवसर, एक चुनौती

राजनीति में हर निर्णय अपने साथ संभावनाएं और चुनौतियां दोनों लेकर आता है। कमलनाथ को राज्यसभा भेजने का निर्णय भी इसी द्वंद का हिस्सा है। यदि कांग्रेस इसे केवल एक पद के रूप में नहीं, बल्कि एक व्यापक रणनीति के रूप में देखती है, तो यह कदम उसे राज्य और राष्ट्रीय दोनों स्तरों पर मजबूती प्रदान कर सकता है। मध्यप्रदेश की राजनीति के इस मोड़ पर यह निर्णय केवल वर्तमान की जरूरत नहीं, बल्कि भविष्य की दिशा तय करने वाला भी हो सकता है। यदि कमलनाथ का अनुभव, संगठन की ऊर्जा और स्पष्ट रणनीति एक साथ जुड़ती है, तो कांग्रेस के लिए यह एक नई शुरुआत का संकेत बन सकता है जहां राजनीति केवल सत्ता का खेल नहीं, बल्कि संतुलन, दूरदर्शिता और नेतृत्व की परीक्षा भी बन जाती है।

राष्ट्रीय राजनीति में भी कांग्रेस का बढ़ेगा कद

कमलनाथ का संसद में जाना कांग्रेस के लिए एक मजबूत आवाज प्रदान करेगा। वे कई बार लोकसभा सदस्य रह चुके हैं और केंद्र सरकार में महत्वपूर्ण मंत्रालयों की जिम्मेदारी संभाल चुके हैं। वे राष्ट्रीय मुद्दों पर प्रभावी ढंग से अपनी बात रख सकते हैं और विपक्ष की भूमिका को और सशक्त बना सकते हैं।

मध्यप्रदेश में कांग्रेस संगठन को मजबूती देने के लिए भी यह कदम उपयोगी हो सकता है। कमलनाथ का राज्य की राजनीति पर गहरा प्रभाव है और वे कार्यकर्ताओं के बीच लोकप्रिय भी हैं। यदि वे राज्यसभा में जाते हैं, तो वे राष्ट्रीय स्तर पर रहते हुए भी प्रदेश संगठन को दिशा देने का काम कर सकते हैं। इससे पार्टी में एकजुटता बढ़ेगी और आगामी चुनावों में बेहतर प्रदर्शन की संभावना बनेगी। वे राजनीतिक समीकरणों को समझने और गठबंधन बनाने में दक्ष माने जाते हैं। कमलनाथ का राज्यसभा जाना एक सकारात्मक संदेश भी देगा कि कांग्रेस अपने अनुभवी नेताओं को उचित महत्व दे रही है। यह भी ध्यान देने योग्य है कि वरिष्ठ नेता दिग्विजय सिंह का कार्यकाल समाप्त होने के बाद कांग्रेस को एक ऐसे कद्दावर चेहरे की आवश्यकता है, जो उस खालीपन को भर सके। इस संदर्भ में कमलनाथ एक स्वाभाविक विकल्प बनकर सामने आते हैं।

छत्तीसगढ़ के वेदांता कंपनी में हुए हादसे का आखिर कौन है जिम्मेदार?

(पेज 1 का शेष)

उद्योग विभाग पर उठ रहे सवाल

इस संदर्भ में उद्योग विभाग की भूमिका पर गंभीर सवाल उठ रहे हैं। आरोप है कि विभाग ने समय रहते कंपनी की खामियों को पकड़ने और सुधारात्मक कार्रवाई करने में लापरवाही बरती। सूत्रों के अनुसार उद्योग मंत्री लखनलाल देवांगन ने कंपनी से मोटी रकम भ्रष्टाचार के रूप में ली जिसके कारण सरकार और विभाग ने आंख में पट्टी बांध रखी। यदि निरीक्षण प्रणाली प्रभावी होती, तो अंदरूनी कमजोरियों का पता पहले ही चल जाता। लेकिन ऐसा प्रतीत होता है कि या तो निरीक्षण औपचारिकता मात्र बनकर रह गया था, या फिर उसमें पारदर्शिता और कठोरता का अभाव था। इसी कड़ी में उद्योग मंत्री लखनलाल देवांगन की भूमिका भी चर्चा में है। विपक्ष और विभिन्न सामाजिक संगठनों द्वारा यह मांग उठाई जा रही है कि मंत्री को नैतिक जिम्मेदारी लेते हुए इस्तीफा देना चाहिए। तर्क यह है कि यदि विभाग अपने कर्तव्यों का सही ढंग से निर्वहन करता, तो इस प्रकार की घटना को रोका जा सकता था। दोषियों की पहचान कर उनके खिलाफ कड़ी कार्रवाई करना आवश्यक है, ताकि भविष्य में ऐसी

घटनाओं की पुनरावृत्ति न हो।

क्या मृतकों की कीमत लगाई सरकार ने 45 लाख

अब बात करते हैं मुआवजे की। राज्य सरकार द्वारा मृतकों के परिजनों को 45 लाख रुपये की सहायता राशि देने की घोषणा की गई है। पहली नजर में यह राशि बड़ी प्रतीत हो सकती है, लेकिन क्या वास्तव में यह किसी इंसान के जीवन का मूल्य हो सकता है? क्या एक परिवार के कमाने वाले सदस्य की मौत की भरपाई पैसों से की जा सकती है? असली जरूरत है ऐसी व्यवस्था बनाने की, जहां मजदूरों की जान की कीमत मुआवजे से नहीं,

बल्कि उनकी सुरक्षा सुनिश्चित करके चुकाई जाए। हर हादसे के बाद मुआवजा देना एक परंपरा बन चुकी है, लेकिन हादसों को रोकने के लिए ठोस कदम उठाने की इच्छाशक्ति अक्सर नजर नहीं आती। इस पूरे मामले में सबसे चिंताजनक पहलू यह है कि क्या हमने पिछली घटनाओं से कोई सबक लिया है? देश के विभिन्न हिस्सों में औद्योगिक दुर्घटनाएं पहले भी होती रही हैं और हर बार यही सवाल उठते हैं- जिम्मेदारी किसकी है, कार्रवाई कब होगी और भविष्य में इसे कैसे रोका जाएगा? लेकिन समय के साथ ये सवाल दब जाते हैं और व्यवस्था फिर से अपने पुराने ढर्रे पर लौट आती है।

जरूरत है कि इस घटना को एक चेतावनी के रूप में लिया जाए। सरकार को चाहिए कि वह औद्योगिक सुरक्षा के नियमों की समीक्षा करे और उन्हें और अधिक कठोर बनाए। साथ ही, निरीक्षण प्रणाली को पूरी तरह पारदर्शी और जवाबदेह बनाया जाए।

मजदूरों को मिले उनके अधिकार

मजदूरों के अधिकारों की रक्षा के लिए श्रमिक संगठनों और नागरिक समाज की भूमिका भी महत्वपूर्ण है। उन्हें चाहिए कि वे इस मुद्दे को लगातार उठाते रहें और जवाबदेही सुनिश्चित करने के लिए दबाव बनाएं। अंततः यह घटना केवल एक औद्योगिक दुर्घटना नहीं, बल्कि हमारी प्रशासनिक और सामाजिक व्यवस्था की परीक्षा है। यदि इस बार भी हम जिम्मेदारियों को तय करने और ठोस सुधार करने में विफल रहते हैं, तो भविष्य में ऐसी घटनाएं फिर होंगी, और हर बार हम केवल शोक और मुआवजे तक सीमित रह जाएंगे। इसलिए अब समय आ गया है कि हम यह तय करें कि क्या हम मानव जीवन को वास्तव में सर्वोपरि मानते हैं, या फिर उसे आंकड़ों और मुआवजे की राशि में आंकते रहेंगे। जवाबदेही तय हो, दोषियों पर कड़ी कार्रवाई हो और ऐसी व्यवस्था बने, जिसमें किसी भी मजदूर को अपनी जान जोखिम में डालकर काम न करना पड़े यही इस त्रासदी से मिली सबसे बड़ी सीख होनी चाहिए।

लापरवाही के कारण फटा बायलर

छत्तीसगढ़ सहित देश के विभिन्न औद्योगिक क्षेत्रों में समय-समय पर होने वाले बॉयलर हादसे केवल तकनीकी खराबी का परिणाम नहीं होते, बल्कि वे कई स्तरों पर मौजूद लापरवाही, कमजोर व्यवस्था और जिम्मेदारी के अभाव का परिणाम होते हैं। हाल के हादसों ने यह स्पष्ट कर दिया है कि यदि समय रहते सावधानी न बरती जाए, तो एक छोटी सी चूक भी बड़े विस्फोट का कारण बन सकती है। इस प्रकार की घटनाएं यह संदेश देती हैं कि औद्योगिक सुरक्षा को केवल कागजों तक सीमित नहीं रखा जा सकता। जब तक कंपनियां उत्पादन के साथ-साथ सुरक्षा को समान महत्व नहीं देंगी और सरकार अपने निरीक्षण तंत्र को मजबूत नहीं बनाएगी, तब तक ऐसे हादसों की पुनरावृत्ति होती रहेगी।

मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने किया जनगणना 2027 अभियान का शुभारंभ

-शशि पांडे

जगत प्रवाह. रायपुर। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने जनगणना 2027 के तहत ऑनलाइन स्व-गणना कर जनगणना अभियान का शुभारंभ किया। इस दौरान उन्होंने स्वयं पोर्टल पर अपनी जानकारी दर्ज कर नागरिकों को इस राष्ट्रीय कार्य में सक्रिय भागीदारी का संदेश दिया। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने कहा कि भारत में विश्व का सबसे बड़ा जनगणना अभियान संचालित हो रहा है और छत्तीसगढ़ में भी आज से ऑनलाइन स्व-गणना की प्रक्रिया शुरू हो गई है। उन्होंने कहा कि नागरिक 16 अप्रैल से 30 अप्रैल 2026 के बीच ऑनलाइन पोर्टल के माध्यम से अपने परिवार से संबंधित जानकारी स्वयं दर्ज कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि इस बार जनगणना को आधुनिक और डिजिटल स्वरूप दिया गया है, जिससे प्रक्रिया अधिक पारदर्शी और सुलभ हो सके।

मुख्यमंत्री साय ने कहा कि जनगणना केवल आंकड़ों का संकलन नहीं, बल्कि देश और राज्य के भविष्य की दिशा तय करने का आधार है। इन आंकड़ों के आधार पर सरकार आने वाले वर्षों की योजनाएं तैयार करती है, ताकि विकास का लाभ हर वर्ग तक प्रभावी रूप से पहुंच सके। मुख्यमंत्री ने बताया कि 1 मई 2026 से जनगणना का पहला चरण शुरू होगा, जिसमें मकान सूचीकरण और गणना का कार्य किया जाएगा। 30 मई तक प्रगणक घर-घर जाकर आवासीय और गैर-आवासीय भवनों, उनकी स्थिति, उपयोग तथा बुनियादी सुविधाओं जैसे पेयजल, शौचालय, बिजली, रसोई गैस, इंटरनेट और संचार व्यवस्था से संबंधित जानकारी एकत्र करेंगे। उन्होंने प्रदेशवासियों से आग्रह करते हुए कहा कि जब भी प्रगणक घर आएं, तो उन्हें सही, स्पष्ट और पूर्ण जानकारी दें, क्योंकि प्रत्येक जानकारी राज्य के विकास की दिशा तय करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। उन्होंने कहा कि जनगणना के दौरान दी गई सभी व्यक्तिगत जानकारी पूर्णतः गोपनीय रखी जाती है और इसका उपयोग केवल सांख्यिकीय एवं नीतिगत उद्देश्यों के लिए ही किया जाएगा। मुख्यमंत्री ने कहा कि छत्तीसगढ़ तेजी से विकास के पथ पर अग्रसर है और "विकसित छत्तीसगढ़ 2047" के संकल्प को साकार करने में जनगणना की महत्वपूर्ण भूमिका है। सही आंकड़े ही बेहतर योजना और प्रभावी विकास की नींव रखते हैं। उन्होंने प्रदेश के सभी नागरिकों से इस महाअभियान को जनभागीदारी का उत्सव बनाने और सक्रिय सहयोग देने की अपील की।

केन-बेतवा लिंक परियोजना के विरोध में 'जलसत्याग्रह' खत्म, सशर्त आंदोलन वापस

-दुर्गेश अरमोती

जगत प्रवाह. छतरपुर। छतरपुर में केन-बेतवा लिंक परियोजना के डूब क्षेत्र में मुआवजे और पुनर्वास की मांग को लेकर चल रहा 'ढोडन बांध पर चिता आंदोलन' आखिरकार 12 दिन बाद समाप्त हो गया। पन्ना और छतरपुर जिला प्रशासन के अधिकारियों के साथ हुई अहम बैठक के बाद आदिवासी महिलाओं और किसानों ने सशर्त आंदोलन वापस लेने का फैसला लिया। केन नदी में उतरकर आदिवासी महिलाएं 'जल सत्याग्रह' कर रही थीं। उनके गोद में बच्चे, हाथों में तख्तियां और आंखों में गुस्सा दिखा। आंदोलनकारियों का कहना है कि प्रशासन ने उनकी प्रमुख मांगों को गंभीरता से सुना और कई ठोस कदम उठाने का भरोसा दिया है। अधिकारियों ने आश्वासन दिया कि एसडीएम स्तर के अधिकारी खुद गांव-गांव जाकर सर्वे करेंगे और जिन लोगों के नाम छूट गए हैं या मुआवजे में गड़बड़ी है, उसे ठीक किया जाएगा।

7 दिन का सर्वे, गांवों में लगेंगे कैंप

कलेक्टर पार्थ जैसवाल के मुताबिक, प्रशासन की टीमें कल से ही प्रभावित गांवों में कैंप लगाएंगी। ग्राम सभाएं आयोजित कर वास्तविक प्रभावित लोगों की पहचान की जाएगी और सूची में नाम जोड़े जाएंगे। साथ ही जिन लोगों को उचित मुआवजा नहीं मिला है, उनकी समस्याओं का समाधान भी किया जाएगा।

आंदोलनकारियों की एक बड़ी मांग मुआवजा पैकेज बढ़ाने की थी। इस पर प्रशासन ने कहा है कि इस प्रस्ताव को शासन स्तर पर भेजा जाएगा। पन्ना और छतरपुर दोनों जिलों का प्रशासन मिलकर इस प्रक्रिया को आगे बढ़ाएगा।

सिर्फ 10 दिन का स्थगन, फिर होगा बड़ा आंदोलन

सामाजिक कार्यकर्ता अमित भटनागर ने साफ कहा कि यह आंदोलन पूरी तरह खत्म नहीं हुआ है, बल्कि सिर्फ 10 दिनों के लिए स्थगित किया गया है। अगर तय समय में मांगें पूरी नहीं हुईं, तो क्षेत्र में फिर से बड़ा आंदोलन शुरू किया जाएगा।

छत्तीसगढ़ में सुशासन की नई इबारत, साय का उभरता प्रभाव

(पेज 1 का शेष)

खरीफ विपणन वर्ष 2025-26 में 25 लाख से अधिक किसानों से 141 लाख मीट्रिक टन धान की खरीदी इस बात का प्रमाण है कि सरकार ने किसानों के हितों को सर्वोच्च प्राथमिकता दी है। कृषक उन्नति योजना इस दिशा में एक मील का पत्थर साबित हुई है। इसके तहत किसानों को अब तक 25 हजार करोड़ रुपये से अधिक का भुगतान किया जा चुका है, जो इस वर्ष होली से पहले 10 हजार करोड़ रुपये के अतिरिक्त भुगतान के साथ 35 हजार करोड़ रुपये तक पहुँच जाएगा। प्रति एकड़ 21 क्विंटल धान की खरीदी और 3100 रुपये प्रति क्विंटल का मूल्य देश में सर्वोच्च स्तर पर है, जो राज्य के किसानों को आर्थिक रूप से सशक्त बना रहा है। यह केवल एक योजना नहीं, बल्कि किसानों के जीवन स्तर को ऊँचा उठाने का सशक्त माध्यम बन चुकी है।

आर्थिक संरचना को भी मजबूत करेगा

साय, स्वयं किसान परिवार से आने के कारण किसानों की पीड़ा और आवश्यकताओं को भलीभांति समझते हैं। यही कारण है कि उनकी नीतियों में व्यवहारिकता और संवेदनशीलता का संतुलन देखने को मिलता है। इन निर्णयों का प्रभाव केवल ग्रामीण अर्थव्यवस्था तक सीमित नहीं है, बल्कि शहरी बाजारों में भी इसका सकारात्मक असर दिखाई देता है। किसानों के हाथ में धन आने से उपभोग बढ़ता है, जिससे व्यापार और उद्योग को भी गति मिलती है। औद्योगिक विकास के क्षेत्र में भी साय सरकार ने उल्लेखनीय पहल की है। राज्य की नई औद्योगिक नीति के तहत अब तक 7.83 लाख करोड़ रुपये के निवेश प्रस्ताव प्राप्त होना इस बात का संकेत है कि छत्तीसगढ़ निवेश के लिए एक उभरता हुआ केंद्र बन रहा है। यह न केवल रोजगार के अवसर बढ़ाएगा, बल्कि राज्य की आर्थिक संरचना को भी मजबूत करेगा।

महिला कल्याण को प्राथमिकता देने का प्रमाण हैं

महिला सशक्तिकरण को लेकर साय सरकार का दृष्टिकोण भी व्यापक और प्रभावी है। वर्ष 2026 को "महतारी गौरव वर्ष" घोषित करना इस दिशा में एक प्रतीकात्मक और प्रेरणादायक कदम है। महतारी वंदन योजना के तहत 70 लाख महिलाओं को प्रतिमाह 1000 रुपये की सहायता प्रदान की जा रही है, जो उनके आर्थिक आत्मनिर्भरता की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान है। इसके अलावा, महिला स्व-सहायता समूहों को आसान ऋण, मातृवंदना योजना के तहत सहायता, पोषण आहार की उपलब्धता और सुरक्षा के लिए सखी वन स्टॉप सेंटर एवं हेल्पलाइन 181 जैसी पहलें महिला कल्याण को प्राथमिकता देने का प्रमाण हैं।

सामाजिक न्याय की दिशा में एक सराहनीय पहल

पंचायत स्तर पर महतारी सदनों का निर्माण और नवा रायपुर में यूनिटी मॉल की योजना महिलाओं को आर्थिक गतिविधियों से जोड़ने का प्रयास है। यह केवल सहायता देने तक सीमित नहीं, बल्कि उन्हें आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में एक ठोस कदम है। इसी तरह भूमिहीन कृषि मजदूरों को वार्षिक आर्थिक सहायता देना सामाजिक न्याय की दिशा में एक सराहनीय पहल है। आवास और आधारभूत सुविधाओं के क्षेत्र में भी साय सरकार का कार्य उल्लेखनीय रहा है। 26 लाख परिवारों को आवास स्वीकृति, 41 लाख घरों तक स्वच्छ पेयजल की आपूर्ति और जल गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए प्रयोगशालाओं की स्थापना यह दर्शाती है कि सरकार बुनियादी जरूरतों को गंभीरता से ले रही है। ग्रामीण क्षेत्रों में जल प्रदाय योजनाओं और विद्युतीकरण से जीवन स्तर में सुधार आया है। परिवहन और कनेक्टिविटी के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण प्रगति हुई है। रावघाट-जगदलपुर रेल परियोजना और नई सड़क परियोजनाएं बस्तर जैसे क्षेत्रों को मुख्यधारा से जोड़ने में सहायक हो रही हैं। इससे न केवल विकास को गति मिलेगी, बल्कि क्षेत्रीय असंतुलन भी कम होगा।

जनसंपर्क और संवाद में भी विश्वास

साय का नेतृत्व केवल योजनाओं और घोषणाओं तक सीमित नहीं है, बल्कि वे जनसंपर्क और संवाद में भी विश्वास रखते हैं। वे लगातार जनता के बीच जाकर उनकी समस्याओं को सुनते हैं और समाधान की दिशा में कार्य करते हैं। यही कारण है कि उन्होंने जनता के बीच विश्वास और अपनत्व का एक मजबूत रिश्ता कायम किया है। उनकी कार्यशैली में समावेशिता और संतुलन स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। वे समाज के हर वर्ग किसान, मजदूर, महिला, युवा और आदिवासी समुदाय को साथ लेकर चलने का प्रयास करते हैं। यही समावेशी दृष्टिकोण उन्हें एक लोकप्रिय और प्रभावी जननेता बनाता है। कुल मिलाकर, विष्णुदेव साय का अब तक का कार्यकाल यह दर्शाता है कि यदि नेतृत्व ईमानदार, संवेदनशील और दूरदर्शी हो, तो विकास केवल एक लक्ष्य नहीं, बल्कि एक सतत प्रक्रिया बन सकता है। उन्होंने यह सिद्ध किया है कि जनसेवा केवल एक दायित्व नहीं, बल्कि एक समर्पण है। छत्तीसगढ़ के विकास की जो दिशा उन्होंने निर्धारित की है, वह आने वाले वर्षों में राज्य को नई ऊँचाइयों तक ले जाने में सक्षम प्रतीत होती है।

सम्पादकीय

नारी शक्ति वंदन अधिनियम था ऐतिहासिक कदम

मोदी सरकार ने नारी शक्ति को सशक्त बनाने के लिए जो संकल्प लिया, नारी शक्ति वंदन अधिनियम उसी दिशा में एक ऐतिहासिक और परिवर्तनकारी कदम था। लेकिन विपक्ष द्वारा इस महत्वपूर्ण संविधान संशोधन को पारित नहीं होने दिया। भारत की लोकतांत्रिक यात्रा में महिलाओं की भागीदारी को सशक्त बनाने की दिशा में नारी शक्ति वंदन अधिनियम एक ऐतिहासिक कदम के रूप में उभरा है। यह अधिनियम लोकसभा और राज्य विधानसभाओं में महिलाओं के लिए 33% आरक्षण सुनिश्चित करने का प्रावधान करता है। लंबे समय से लंबित इस मांग का पूरा होना न केवल राजनीतिक प्रतिनिधित्व के संतुलन को सुधारने की दिशा में महत्वपूर्ण है, बल्कि यह सामाजिक न्याय और लैंगिक समानता के मूल्यों को भी सुदृढ़ करता है। भारतीय समाज में महिलाओं की भूमिका सदियों से बहुआयामी रही है, लेकिन राजनीतिक क्षेत्र में उनकी भागीदारी अपेक्षाकृत सीमित रही है। हालांकि पंचायती राज संस्थाओं में आरक्षण के माध्यम से महिलाओं ने अपनी नेतृत्व क्षमता का प्रभावी प्रदर्शन किया है, फिर भी राष्ट्रीय और राज्य स्तर की राजनीति में उनकी उपस्थिति संतोषजनक नहीं रही। ऐसे में यह अधिनियम महिलाओं को निर्णय-निर्माण की मुख्यधारा में लाने का एक सशक्त माध्यम बन सकता है। भारतीय संसद द्वारा पारित यह कानून केवल एक संवैधानिक संशोधन नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन का प्रतीक भी है। यह उन बाधाओं को तोड़ने का प्रयास है, जो महिलाओं को राजनीति में प्रवेश करने से रोकती रही हैं- चाहे वे सामाजिक पूर्वाग्रह हों, आर्थिक सीमाएं हों या राजनीतिक संरचनाओं की जटिलताएं। इस दृष्टि से, यह अधिनियम महिलाओं के आत्मविश्वास को बढ़ाने और उन्हें नेतृत्व के अवसर प्रदान करने का मार्ग प्रशस्त करता है।

हालांकि, इस अधिनियम के क्रियान्वयन को लेकर कुछ चुनौतियां भी सामने आती हैं। सबसे प्रमुख मुद्दा इसकी लागू होने की समय-सीमा है, जो परिसीमन और जनगणना से जुड़ी प्रक्रियाओं पर निर्भर करती है। इससे यह आशंका उत्पन्न होती है कि वास्तविक लाभ मिलने में विलंब हो सकता है। इसके अतिरिक्त, यह भी आवश्यक है कि आरक्षण का लाभ केवल प्रतीकात्मक न रह जाए, बल्कि वास्तविक नेतृत्व और सशक्तिकरण में परिवर्तित हो। कुछ आलोचक यह भी तर्क देते हैं कि आरक्षण से "प्रॉक्सी राजनीति" को बढ़ावा मिल सकता है, जहां महिलाएं केवल नाममात्र की प्रतिनिधि बनकर रह जाएंगी और वास्तविक निर्णय पुरुष ही लेंगे। हालांकि, पंचायती स्तर के अनुभव इस धारणा को काफी हद तक खारिज करते हैं, जहां महिलाओं ने स्वतंत्र और प्रभावी नेतृत्व का परिचय दिया है। इसलिए, यह आवश्यक है कि समाज में जागरूकता और शिक्षा के माध्यम से महिलाओं को वास्तविक सशक्तिकरण की ओर अग्रसर किया जाए।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इस अधिनियम को "नए भारत की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम" बताया है। निस्संदेह, यह पहल भारत को अधिक समावेशी और प्रतिनिधिक लोकतंत्र की ओर ले जाने की क्षमता रखती है। लेकिन इसके साथ ही यह भी जरूरी है कि राजनीतिक दल महिलाओं को टिकट देने में पारदर्शिता और समान अवसर सुनिश्चित करें। नारी शक्ति वंदन अधिनियम केवल एक कानूनी प्रावधान नहीं, बल्कि एक सामाजिक क्रांति की शुरुआत है। यह महिलाओं को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक करने और उन्हें देश के विकास में समान भागीदारी देने का माध्यम है। यदि इसे प्रभावी ढंग से लागू किया गया, तो यह भारतीय लोकतंत्र को और अधिक सशक्त, समावेशी और न्यायपूर्ण बना सकता है।

सियासी गहमागहमी

सियासी पदों पर नियुक्ति का बढ़ता इंतजार

मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री मोहन यादव का यह बयान कि भाजपा संगठन में पदों को लेकर नेताओं को अभी और इंतजार करना होगा, पार्टी की आंतरिक कार्यप्रणाली और रणनीतिक संतुलन को दर्शाता है। भारतीय जनता पार्टी जैसे विशाल राजनीतिक दल में संगठनात्मक नियुक्तियां केवल व्यक्तिगत दावेदारी के आधार पर नहीं, बल्कि व्यापक राजनीतिक समीकरणों, सामाजिक संतुलन और भविष्य की रणनीति को ध्यान में रखकर की जाती हैं। यह टिप्पणी संकेत देती है कि पार्टी नेतृत्व फिलहाल जल्दबाजी में कोई निर्णय लेने के बजाय ठोस और दीर्घकालिक दृष्टिकोण अपनाना चाहता है। चुनावी सफलता के बाद अक्सर संगठन में पदों की अपेक्षा बढ़ जाती है, लेकिन ऐसे समय में संयम और धैर्य बनाए रखना नेतृत्व की प्राथमिकता होती है। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि पार्टी अंदरूनी असंतोष को नियंत्रित रखते हुए एक व्यवस्थित प्रक्रिया के तहत जिम्मेदारियों का वितरण करना चाहती है। हालांकि, लंबे इंतजार से कुछ नेताओं में असंतोष भी पनप सकता है, लेकिन यदि यह प्रक्रिया पारदर्शी और संतुलित रही, तो संगठन की मजबूती ही बढ़ेगी। कुल मिलाकर, यह बयान पार्टी के अनुशासन और संरचित निर्णय प्रक्रिया को रेखांकित करता है।

ब्लॉक और विधानसभा में चंदा जुटाने की योजना

कांग्रेस की "घर-घर 100 रुपये" जैसी योजना, यदि वास्तव में चंदा जुटाने की रणनीति के रूप में लागू की जाती है, तो इसका असर केवल आर्थिक नहीं बल्कि राजनीतिक और मनोवैज्ञानिक भी होगा। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस लंबे समय से संसाधनों और जनसंपर्क के स्तर पर चुनौतियों का सामना कर रही है, ऐसे में यह पहल जमीनी स्तर पर कार्यकर्ताओं को सक्रिय करने का एक माध्यम बन सकती है। इस तरह की योजना का सबसे बड़ा लाभ यह हो सकता है कि पार्टी आम नागरिकों से सीधा जुड़ाव स्थापित करे। छोटे-छोटे योगदान लोगों में भागीदारी और जुड़ाव की भावना पैदा करते हैं, जैसा कि कई अंतरराष्ट्रीय राजनीतिक अभियानों में देखा गया है। इससे पार्टी को यह संदेश देने में मदद मिल सकती है कि वह "जनता के सहयोग से चलने वाली पार्टी" है। हालांकि, इसकी सफलता पूरी तरह क्रियान्वयन पर निर्भर करेगी। यदि इसे पारदर्शिता, स्पष्ट उद्देश्य और मजबूत संगठनात्मक नेटवर्क के साथ लागू नहीं किया गया, तो यह केवल एक प्रतीकात्मक पहल बनकर रह सकती है। साथ ही, विपक्ष इसे आर्थिक मजबूरी या राजनीतिक कमजोरी के रूप में भी पेश कर सकता है। कुल मिलाकर, यह योजना संभावनाओं से भरी है, लेकिन इसे प्रभावी बनाने के लिए भरोसा, पारदर्शिता और जमीनी सक्रियता जरूरी होगी।

हफ्ते का कार्टून

ट्वीट-ट्वीट

संशोधन विधेयक गिर गया।
उन्होंने महिलाओं के नाम पर, संविधान को तोड़ने के लिए, असंवैधानिक तरकीब का इस्तेमाल किया।
भारत ने देख लिया।
INDIA ने रोक दिया।

जय संविधान।

-राहुल गांधी
कांग्रेस नेता @RahulGandhi

प्रदेश के हजारों प्राथमिक शिक्षक टीईटी परीक्षा की अनिवार्यता के विरोध में कल भोपाल में एकजुट हुए।
नए प्रावधान से हजारों शिक्षकों की नौकरी पर खतरा मंडरा रहा है।
मेरी प्रदेश सरकार से मॉंग है कि शिक्षकों की न्यायोचित मांगों पर विचार करें और माननीय न्यायालय में सही ढंग से शिक्षकों का पक्ष रखें।

-कमलनाथ
प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष
@OfficeOfKNath

राजवीरों की बात

संगठनात्मक दक्षता और संवाद कौशल के धनी वेणुगोपाल

समता पाठक/जगत प्रवाह

केसी वेणुगोपाल भारतीय राजनीति के उन नेताओं में गिने जाते हैं, जिन्होंने संगठनात्मक क्षमता, सादगीपूर्ण व्यक्तित्व और निरंतर सक्रियता के बल पर राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बनाई। उनका पूरा नाम केरल चंद्रशेखरन वेणुगोपाल है। उनका जन्म 4 फरवरी 1963 को केरल के अलप्पुझा जिले में हुआ। प्रारंभिक जीवन से ही वे सामाजिक और राजनीतिक गतिविधियों के प्रति जागरूक रहे, जिसका प्रभाव उनके आगे के जीवन में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। वेणुगोपाल की शिक्षा केरल में ही संपन्न हुई। छात्र जीवन के दौरान ही उन्होंने राजनीति में रुचि लेना शुरू कर दिया था। वे छात्र संगठन के माध्यम से सार्वजनिक जीवन में सक्रिय हुए और धीरे-धीरे उन्होंने अपनी नेतृत्व क्षमता का परिचय दिया। उनकी संगठनात्मक दक्षता और संवाद कौशल ने उन्हें युवाओं के बीच लोकप्रिय बना दिया। इसी दौर में वे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की विचारधारा से प्रभावित हुए और पार्टी के साथ सक्रिय रूप से जुड़ गए। उनका राजनीतिक करियर केरल विधानसभा से शुरू हुआ, जहाँ वे विधायक के रूप में चुने गए। विधायक रहते हुए उन्होंने अपने क्षेत्र के विकास, बुनियादी सुविधाओं और जनसमस्याओं के समाधान पर विशेष ध्यान दिया। उनकी कार्यशैली में ईमानदारी और पारदर्शिता की झलक मिलती है, जिसने उन्हें आम जनता के बीच भरोसेमंद नेता के रूप में स्थापित किया। बाद में वे राष्ट्रीय राजनीति में भी सक्रिय हुए और लोकसभा के सदस्य बने। सांसद के रूप में उन्होंने संसद में विभिन्न मुद्दों को प्रभावी ढंग से उठाया। वे विशेष रूप से शिक्षा, रोजगार, सामाजिक न्याय और विकास से जुड़े विषयों पर अपनी स्पष्ट और तार्किक राय रखने के लिए जाने जाते हैं। उनकी कार्यशैली में संतुलन और संयम दिखाई देता है, जो उन्हें अन्य नेताओं से अलग बनाता है।

केसी वेणुगोपाल का कांग्रेस पार्टी में योगदान केवल जनप्रतिनिधि तक सीमित नहीं रहा, बल्कि उन्होंने संगठन को मजबूत करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वे अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी (AICC) के महासचिव के रूप में कार्य कर चुके हैं। इस पद पर रहते हुए उन्होंने पार्टी के विभिन्न राज्यों में संगठन को सुदृढ़ करने, कार्यकर्ताओं के बीच समन्वय स्थापित करने और चुनावी रणनीतियों को प्रभावी बनाने में अहम भूमिका निभाई। उनकी पहचान एक ऐसे नेता के रूप में भी है, जो पर्दे के पीछे रहकर भी बड़े निर्णयों में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। वे नेतृत्व और कार्यकर्ताओं के बीच एक मजबूत कड़ी के रूप में कार्य करते हैं। पार्टी के भीतर उनकी विश्वसनीयता और स्वीकार्यता उन्हें एक प्रभावशाली रणनीतिकार बनाती है।

व्यक्तित्व की दृष्टि से वेणुगोपाल सरल, विनम्र और अनुशासित हैं। वे अनावश्यक विवादों से दूर रहकर अपने कार्य पर ध्यान केंद्रित करते हैं। यही कारण है कि वे राजनीतिक उतार-चढ़ाव के बावजूद अपनी स्थिर छवि बनाए रखने में सफल रहे हैं। उनके सहयोगी उन्हें एक मेहनती और समर्पित नेता के रूप में देखते हैं। समग्र रूप से देखा जाए तो केसी वेणुगोपाल का जीवन संघर्ष, समर्पण और निरंतर प्रगति का उदाहरण है। उन्होंने छात्र राजनीति से लेकर राष्ट्रीय स्तर तक की यात्रा अपने परिश्रम और निष्ठा के बल पर तय की है। भारतीय राजनीति में उनका योगदान विशेष रूप से संगठनात्मक मजबूती और जनसंपर्क के क्षेत्र में उल्लेखनीय माना जाता है। आने वाले समय में भी उनसे कांग्रेस पार्टी और देश की राजनीति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने की अपेक्षा की जाती है।

दिल्ली से देहरादून का सफर सिर्फ ढाई घंटे में

-प्रमोद कुमार

जगत प्रवाह. देहरादून। दिल्ली–देहरादून इकोनॉमिक कॉरिडोर के लोकार्पण के बाद, ढाई घंटे में दिल्ली का सफर ख्वाब से हकीकत बन चुका है। शुरुआती तीन दिनों में इस आधुनिक एक्सप्रेस वे से गुजरने वाले यात्रियों के अनुभव शानदार रहे हैं। अच्छी बात यह है कि सड़क, रेल परियोजनाओं की यही रफ्तार अगले एक साल बनी रहेगी। इस दौरान कई महत्वपूर्ण इंफ्रा प्रोजेक्ट पूरे होने की उम्मीद है। केंद्र सरकार के सहयोग से वर्तमान में राज्य के भीतर करीब एक लाख 30 हजार करोड़ के कई इंफ्रा प्रोजेक्ट पर कार्य गतिमान है। इसी क्रम में देहरादून को अगले महीने तक, 1650 करोड़ के लागत से तैयार पौंटा साहिब–देहरादून फोर लेन मार्ग की सुविधा भी मिलने वाली है, यह मार्ग लगभग बनकर तैयार हो चुका है। इसके बाद जून में सहारनपुर बाईपास से हरिद्वार तक छह लेन वाला 51 किमी हाईवे भी यातायात के लिए उपलब्ध हो जाएगा। जबकि इसी साल अक्तूबर तक, हरिद्वार बाईपास के प्रथम चरण का भी कार्य पूरा किए जाने की तैयारी है, कुल 1600 करोड़ की लागत वाली इस परियोजना पर तेजी से काम चल रहा है, जो आगामी कुंभ मेला के लिए महत्वपूर्ण साबित होगी। इधर, कुंभ क्षेत्र की एक और प्रमुख सड़क परियोजना, ऋषिकेश बाईपास पर भी अगस्त तक काम शुरु होने की उम्मीद है, इस परियोजना पर 1100 करोड़ की लागत आएगी। केंद्र सरकार ने 716 करोड़ की लागत से निर्माणाधीन 12 किमी लंबा झाझरा-आशारोड एलिवेटेड रोड को भी अगले साल अप्रैल तक पूरा करने का लक्ष्य निर्धारित कया है।

कुमाँऊ क्षेत्र की महत्वपूर्ण परियोजना- कुमांऊ क्षेत्र की बात करें तो 1050 करोड़ की लागत से निर्माणाधीन 21 किमी लम्बा रूद्रपुर फोरलेन बाईपास इसी साल अक्टूबर तक पूरा किए जाने की तैयारी है, इससे रुद्रपुर शहर का जाम खत्म हो सकेगा। वहीं 936 करोड़ की लागत से निर्माणाधीन 15 किमी लंबा काशीपुर बाईपास भी इसी साल दिसंबर तक पूरा हो जाएगा। सीमांत क्षेत्र की एक और महत्वपूर्ण सड़क परियोजना टनकपुर-पिथौरागढ़–लिपुलेख का निर्माण कार्य भी अगले एक साल में पूरा होने की उम्मीद है।

फिल्में समाज का आईना या रक्तरंजित हिंसा का उभरता प्रतिबिंब?

-नीलेश वर्मा

फिल्में समाज का आईना हैं, जो जीवन के उतार-चढ़ाव, प्रेम, संवेदना, संघर्ष, नैतिकता और मानवीय मूल्यों का संतुलित चित्रण प्रस्तुत करती हैं। किंतु कुछ समय से यही आईना रक्तरंजित दृश्यों और नायक की क्रूरता से लाल होता जा रहा है। बदलते दौर में चलचित्रों का स्वरूप तेजी से परिवर्तित हुआ है और अब परदे पर नायक का चरित्र पारंपरिक आदर्शों से हटकर खलनायक से अधिक आक्रामक, प्रतिशोधी और हिंसक रूप में उभर रहा है। यह बदलाव केवल मनोरंजन तक सीमित नहीं रहा, बल्कि समाज और विशेष रूप से युवा पीढ़ी के मनोविज्ञान को गहराई से प्रभावित करने वाला है, क्योंकि युवा मन स्वभाव से अनुकरणीय होता है, जो अपने सामने प्रस्तुत आदर्शों और व्यक्तित्वों को सहज ही आत्मसात कर लेता है। जब फिल्मों में नायक को हिंसा के माध्यम से समस्याओं का समाधान करते हुए दिखाया जाता है और उस हिंसा को साहस, शक्ति तथा सफलता के रूप में प्रस्तुत किया जाता है, तब यह संदेश युवाओं के मन में गहराई से स्थापित हो जाता है। परिणामस्वरूप वे वास्तविक जीवन में भी आक्रामकता को उचित मानने लगते हैं, जिससे सहिष्णुता, धैर्य और संवेदनशीलता जैसे मानवीय गुणों का क्षरण होने लगता है तथा समाज में असहिष्णुता और त्वरित प्रतिक्रिया की प्रवृत्ति बढ़ने लगती है। यह स्थिति सामाजिक संतुलन के लिए गंभीर चुनौती बन सकती है।

आज भारत में हिंसात्मक फिल्मों की बढ़ती लोकप्रियता का प्रमुख कारण बाजारवादी दृष्टिकोण है, जो एक बड़े व्यावसायिक उपक्रम के रूप में विकसित हो चुका है। फिल्म निर्माता अब दर्शकों की रुचि के अनुरूप ऐसे विषयों को प्राथमिकता देते हैं, जो अधिक से अधिक लोगों को आकर्षित कर सकें। फिल्मों में हिंसा, उत्तेजना, गाली-गलोच और रोमांच ऐसे तत्व हैं जो दर्शकों में त्वरित आकर्षण उत्पन्न करते हैं, इसलिए इन्हें अधिक महत्व दिया जाने लगा है। इसके अतिरिक्त, डिजिटल मंचों के विस्तार ने भी इस प्रवृत्ति को बढ़ावा दिया है, जहाँ पारंपरिक नियंत्रण के अभाव में अधिक स्वतंत्रता के साथ क्रूर और अवास्तविक हिंसा को प्रस्तुत किया जा रहा है।

पिछले कुछ वर्षों में अनेक फिल्मों ने यह स्पष्ट कर दिया है कि हिंसा पर आधारित कहानी भी व्यापक लोकप्रियता प्राप्त कर सकती है। जिनमें प्रमुख है 'एनिमल' जिसमें नायक के उग्र और हिंसक रूप को प्रमुखता दी गई और उसे दर्शकों का व्यापक समर्थन भी मिला। इसी प्रकार 'किल' में सीमित परिवेश के भीतर अत्यधिक क्रूर संघर्ष को प्रस्तुत कर तीव्र प्रभाव उत्पन्न किया गया। 'मार्को' जैसी फिल्मों ने अपनी रक्तरंजित प्रस्तुति के कारण विशेष चर्चा प्राप्त की, जबकि हाल की 'धुरंधर' और 'ओ रोमियो' में भी रक्तरंजित हिंसक आक्राम्कता और प्रतिशोध की भावना को प्रमुख स्थान दिया गया है। यह प्रवृत्ति केवल भारतीय सिनेमा तक सीमित नहीं है, बल्कि विश्व स्तर पर भी ऐसे चलचित्रों की संख्या और लोकप्रियता में वृद्धि हो रही है।

वर्तमान परिस्थिति में चलचित्र प्रमाणन से संबंधित संस्था की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है। भारत में यह दायित्व केंद्रीय फिल्म प्रमाणन बोर्ड के पास है, जो फिल्मों को विभिन्न श्रेणियों में वर्गीकृत करता है तथा आवश्यकतानुसार आपत्तिजनक दृश्यों में संशोधन भी कराता है। तब यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि क्या यह व्यवस्था केवल औपचारिकता तक सीमित रह गई है या वास्तव में समाज के व्यापक हितों की रक्षा कर पा रही है। कई बार अत्यधिक हिंसात्मक दृश्यों को केवल वयस्कों के लिए उपयुक्त घोषित कर दिया जाता है, जबकि उनका अप्रत्यक्ष प्रभाव समाज और विशेषकर युवाओं पर ही पड़ता है। इसलिए यह विषय अधिक गंभीरता और उत्तरदायित्व की आवश्यकता को प्रकट करता है।

आज हमें स्वीकार करना होगा कि फिल्में समाज का दर्पण हैं, जो केवल प्रतिबिंब ही प्रस्तुत नहीं करतीं, बल्कि भावी पीढ़ी और समाज को दिशा भी देती हैं। फिल्मों में हिंसा का चित्रण यथार्थ के संदर्भ में सीमित रहे, तो वह समाज को जागरूक कर सकता है, किंतु जब वही हिंसा रक्तरंजित होकर मनोरंजन का प्रमुख साधन बन जाती है, तब वह चिंता का विषय बन जाती है। वर्तमान परिस्थितियाँ संकेत करती हैं कि यदि फिल्मों में दिखाई जाने वाले हिंसात्मक चित्रण में संतुलन स्थापित नहीं किया गया, तो यह प्रवृत्ति युवा पीढ़ी को प्रेरित करने की बजाय उसे विचलित और भ्रमित कर सकती है। इसलिए अब आवश्यक हो गया है कि भारतीय सिनेमा मनोरंजन के साथ-साथ अपनी सामाजिक जिम्मेदारी का भी निर्वहन करे और ऐसी सामग्री प्रस्तुत करे, जो मानवीय मूल्यों को सुदृढ़ करने में सहायक हो।

परमाणु युद्ध में न बदल जाए होर्मुज का टकराव

प्रमोद भार्गव

वरिष्ठ पत्रकार

अमेरिका और ईरान के बीच इस्लामाबाद में 21 घंटे चली शांति समझौते की वार्ता विफल रही। आशंकाएं भी यही थीं कि जब तीन राष्ट्रों के बीच संप्रभुता के प्रश्न खड़े हों, तो फिर शांति समझौता कैसे संभव है? अब तो युद्ध विराम के भविष्य को लेकर भी अनिश्चितता के बादल गहरा गए हैं। होर्मुज में अमेरिका द्वारा की गई नाकाबंदी के बाद इस उम्मीद पर पानी फिरता दिख रहा है कि एक बार फिर शत्रु देश समझौते के लिए बातचीत को तैयार होंगे। अमेरिका और ईरान जिस तरह का हठ दिखा रहे हैं, उससे तो लगता है कि इस जंग का अंतिम निर्णय घातक हथियारों से ही होगा? इजराइल तो वार्ता के दौरान भी बम फोड़ता रहा। हालांकि संघर्ष विराम के दो सप्ताह बीतने के बाद जब यह युद्ध फिर से आरंभ होगा तो इसका असर व्यापक दिखाई देगा? दुनिया तीसरे युद्ध का सामना भी करने को विवश हो सकती है? ऐसा हुआ तो इस युद्ध के परिणाम शत्रु संहार के ऐसे कारण भी बन सकते हैं कि युद्ध में जापान की तरह अमेरिका परमाणु हथियारों से भी ईरान पर हमला बोल दे?

वार्ता में विवादित मुद्दों को लेकर हठ दृढ़ता से कायम रहा। नतीजतन अमेरिकी उपराष्ट्रपति जेडी वेंस और ईरानी संसद के स्पीकर मोहम्मद गालिबाफ अपने-अपने प्रतिनिधि मंडल के साथ स्वदेष लौट गए। वार्ता में ईरान जहां होर्मुज जलडमरूमध्य मार्ग नियंत्रण मुक्त नहीं करने पर अड़ा रहा, वहीं अमेरिका ईरान को इस बात के लिए भी राजी नहीं कर पाया कि वह यूरेनियम संवर्धन परमाणु कार्यक्रम रोकने को तैयार दिखाई दे रहा है। ये दोनों ही प्रश्न ईरान के लिए सामरिक और आर्थिक सुरक्षा से जुड़े सवाल बन गए हैं। अतएव सैन्य दबाव के बावजूद ईरान ने अमेरिकी षर्तों के आगे घुटने टेकने से इंकार कर दिया। उसने होर्मुज पर अपना अधिकार बनाए रखा है, जो इस युद्ध में एक मुख्य हथियार के रूप में उभरकर सामने आया है। हालांकि अब अमेरिका ने इस जल क्षेत्र में आर्थिक नाकेबंदी शुरू कर दी है। ईरान ने इस जल क्षेत्र में छोटी पनडुब्बियों, टारपीडो, तेज नावों और समुद्री बारूद के जरिए यह साबित कर दिया है कि वह दुनिया की तेल आपूर्ति को बाधित कर सकता है। टारपीडो स्वचालित एक ऐसा सिगार के आकार की पानी के भीतर चलने वाला बारूदी मिसाइल है, जिसे दुश्मन के जहाजों को नष्ट करने के लिए इस्तेमाल किया जाता है। अमेरिका ने दावा किया है कि जल-तल में छिपी बारूद को निष्क्रिय करने में ब्रिटेन मदद करेगा। किंतु ब्रिटेन ने किसी भी प्रकार की मदद करने के वादे से इंकार किया है। हालांकि स्वयं यूएस के पास होर्मुज जल क्षेत्र को बारूद मुक्त करने के लिए मानवरहित ड्रोन तकनीक मौजूद है। लेकिन ईरान ने कुटिलता बरतते हुए इस जल क्षेत्र में 'इंफ्लुएंस माइनिंग' का जाल बिछाया हुआ है। यह जहाजों के भार और चुंबकीय तरंगों के प्रभाव से विस्फोट के साथ फटती हैं और तेल से भरे जहाज को आग के हवाले करने में सक्षम होती हैं।

इस बेनतीजा रही वार्ता से नाराज अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने अपनी नौसेना को जलडमरूमध्य में नाकाबंदी करने के निर्देश दे दिए हैं। ट्रंप ने दुनिया के देशों को यह चेतावनी भी दी है कि जो भी देश होर्मुज स्ट्रेट पार करने के लिए ईरान को शुल्क देगा उसे आगे नहीं जाने दिया जाएगा। केवल उन जहाजों को छूट मिलेगी, जो अमेरिका के मित्र देशों से तेल खरीदेंगे। अमेरिका का यह इकतरफा प्रतिबंध भी दुनिया की अर्थव्यवस्था को अस्थिर करने का हठ है। इस हठ के चलते जहां अंतरराश्ट्रीय बाजार में तेल की कीमतें बढ़ेंगी, वहीं दुनिया में ऊर्जा संकट गहराने लग जाएगा। लिहाजा अमेरिका को इस तरह के बेजा प्रतिबंध से मुक्त रहने की जरूरत है। अमेरिका को यह भी सोचने की जरूरत है कि ईरान की अर्थव्यवस्था अब केवल तेल के निर्यात पर निर्भर नहीं रह गई है। पिछले दो दशक में उसने विनिर्माण और उपभोक्ता वस्तुओं का निर्यात करके भी अपनी जीडीपी को मजबूत किया है। ईरान की कुल जीडीपी में तेल की भूमिका मात्र एक चौथाई रह गई है। बावजूद ईरान का होर्मुज पर जबरन कब्जा और शुल्क वसूली पूरी तरह अवैध है। क्योंकि जलडमरूमध्य दुनिया के अनेक उन समुद्री मार्गों जैसा है, जिन पर किसी देश विशेष का अधिकार नहीं है। समुद्री मार्गों से सभी देशों के जहाज और नौकाओं को आवागमन का स्वतंत्र अधिकार है। ईरान इस पर बेजा अधिकार जमाया तो यह उसके शुभचिंतक देषों के लिए भी ठीक नहीं लगेगा। परंतु ईरान ने ईंट का जवाब पत्थर से देते हुए कहा है कि शत्रु देश की अनुचित कार्यवाही के घातक परिणाम निकलेंगे। ईरान के इस्लामिक रिवोल्यूशनरी गार्ड्स (आईआरजीसी) अमेरिकी नाकाबंदी पर चौतरफा निगरानी रखे हुए हैं। अतएव यह आशंका प्रबल है कि जब भी अमेरिकी युद्धपोत होर्मुज स्ट्रेट से गुजरेंगे तो उन पर ईरान बम वर्शा किए बिना नहीं चूकेगा। दोनों देशों में समझौते की स्थिति तभी निर्मित होगी, जब वे अपनी-अपनी हठवादिता को शिथिल करें।

ईरान की बाधाओं से समुद्री व्यापार पर प्रतिकूल असर पड़ रहा है। क्योंकि युद्ध के क्षेत्र में बीमा कंपनियां जहाजों पर हमले होते हैं, तो वे बीमा की राशि नहीं चुकातीं। इस कारण व्यापारिक सामान से लदे जहाजों की आवाजाही लगभग ठप हो जाती है। इस जलमार्ग पर स्थिति इसलिए और चिंताजनक हो गई है, क्योंकि अब ईरान कह रहा है कि उसने जो समुद्री माइंस बिछाई थीं, अब उसे खुद ही उनकी सटीक जानकारी नहीं है, कि वे कहां बिछाई गई हैं। परंतु इसे एकाएक ईरान की भूल नहीं कहा जा सकता है? यह झूठ फैलाना उसकी सोची-समझी रणनीति का हिस्सा भी हो सकती है? इस सिलसिले में विशेषज्ञों का मानना है कि यह मामला जितना दिख रहा है, उससे कहीं ज्यादा जटिल हो सकता है। अतएव यह दावा ईरान का अमेरिका को झुकाने के लिए शतरंज की बिसात पर चला 'दांव' भी हो सकता है? ईरान की मंशा यह भी हो सकती है कि इन बारूदी सुरंगों की वास्तविक स्थिति की चूक का बहाना बनाकर अमेरिका और इजरायल पर वैश्विक दबाव बनाकर भविष्य की शांति वार्ता में अपनी शर्तें मनवा ली जाएं? लेकिन तात्कालिक परिस्थितियां ऐसे संकेत दे रही हैं कि अमेरिका और इजरायल मिलकर युद्ध की रणनीति को और उकसाने का काम कर रही हैं। इस समूचे घटनाक्रम का अहम पहलू यह भी है कि युद्ध का प्रभाव सीमाओं का उल्लंघन करते हुए दुनिया को संकट में डाल सकता है। इसका सबसे बुरा असर भारत जैसे उन विकासषील देशों को झेलना पड़ सकता है, जहां बढ़ती महंगाई और तेल की कमी जैसी समस्याएं पूर्व से ही मौजूद है। वैसे भी भारत 80 प्रतिषत से ज्यादा तेल की आपूर्ति आयात से करता है। दरअसल अमेरिका ईरान पर इकतरफा समर्पण जैसी शर्तें थोपकर समझौता करना चाहता है। जबकि समझौते में दूसरे पक्ष को भरोसे में लेना भी जरूरी होता है। ऐसा नहीं होगा तो ट्रंप पश्चिम एशिया की शांति भंग करने के जिम्मेदार तो होंगे ही, वैश्विक अर्थव्यवस्था को जो भारी हानि होगी उसके लिए भी जिम्मेदार ठहराए जाएंगे। ट्रंप के दूसरी बार राष्ट्रपति बनने के बाद जिस तरह की उनकी सनक और मनमानियां देखने में आ रही हैं, उससे तो लगता है कि ट्रंप की सनक कायम रही तो वे ईरान पर परमाणु हमला भी कर सकते हैं। मध्यस्थता करने वाले पाकिस्तान का दोगलापन और स्वार्थ भी इस युद्ध की आग में घी डालने का काम कर सकता है।

रामेश्वरम और जगन्नाथपुरी की धार्मिक यात्रा से वापसी पर हुआ स्वागत अभिनन्दन

-प्रमोद बरसले

जगत प्रवाह. टिमरनी। रामेश्वरम एवं जगन्नाथपुरी के पावन तीर्थ दर्शन कर लौटे नगर के श्रद्धालुजनों का वार्ड नंबर 8 के रहवासियों द्वारा भव्य स्वागत किया गया। स्वागतकर्ता राजेश योगी नाथ महाराज ने बताया कि अपने नगर से लगभग 2 दर्जन लोगों का जत्था सकुशल तीर्थयात्रा कर नगर में वापस आया है, इस अवसर पर सभी तीर्थ यात्रियों का पुष्पहार से स्वागत कर उनका अभिनंदन किया गया। यात्रा से लौटे पंडित मनीष शुक्ला, पंडित नारायण जोशी, श्रीमती काशी बागरे बुआ सहित सभी जनों ने बताया कि उनके द्वारा अपने क्षेत्र की सुख समृद्धि की कामना ईश्वर से की गई और यात्रा निर्विघ्न सानंद संपन्न हुई। उनके द्वारा सभी स्वागत करने वाले साथियों को धन्यवाद ज्ञापित किया गया। इस पुनीत अवसर पर वार्ड के वरिष्ठ नागरिक रामदास चौधरी मुकेश शांडिल्य निशु साकल्ले राकेश शांडिल्य कुशवाहाजी नारायण बोरसे बांकेजी मोहन बागरे लखन मानकर आदि उपस्थित रहे।

10वीं और 12वीं का परीक्षा परिणाम: नरसिंहपुर को मिला तीसरा स्थान

-बद्रीप्रसाद कौरव

जगत प्रवाह. नरसिंहपुर। 10वीं और 12वी के परीक्षा परिणाम में जिले में कक्षा 10वीं का परीक्षा परिणाम 91.21 प्रतिशत और कक्षा 12वीं का परीक्षा परिणाम 92.62 प्रतिशत रहा। कलेक्टर श्रीमती रजनी सिंह ने मेरिट सूची में स्थान प्राप्त करने वाले छात्र- छात्राओं को इस सफलता पर बधाई और शुभकामनाएं दी। उन्होंने विद्यार्थियों के अभिभावकों एवं विद्यालय के प्राचार्यों की भी प्रशंसा की। कलेक्टर ने कहा कि यह सफलता विद्यार्थियों की मेहनत, शिक्षकों के मार्गदर्शन और अभिभावकों के सहयोग का परिणाम है। उन्होंने सभी विद्यार्थियों के उज्जवल भविष्य की कामना की। इस अवसर पर सीईओ जिला पंचायत गजेन्द्र सिंह नागेश, जिला शिक्षा अधिकारी डॉ. अनिल कुमार कुशवाहा, डाइट प्राचार्य राजीव किशोर श्रीवास्तव, बीईओ ब्रजेश शर्मा सहित संबंधित विद्यालयों के प्राचार्य, शिक्षक एवं बच्चों के अभिभावक मौजूद थे। जिला शिक्षा अधिकारी डॉ. अनिल कुमार कुशवाहा ने बताया कि जिले में सत्र 2026 में हाई स्कूल का परीक्षा परिणाम 91.21 प्रतिशत है। जिले ने प्रदेश में तीसरा और संभाग में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। हाई स्कूल परीक्षा में जिले के 5 विद्यार्थियों ने प्रदेश की मेरिट सूची में स्थान प्राप्त किया है। इसी प्रकार हायर सेकेंडरी परीक्षा परिणाम 92.62 प्रतिशत रहा। जिले ने 12वीं की परीक्षा में प्रदेश में तीसरा और संभाग में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। साथ ही हायर सेकेंडरी परीक्षा में जिले के दो विद्यार्थियों ने प्रदेश की मेरिट सूची में स्थान प्राप्त किया है।

सहेज लो पानी, न रहेगी प्यास बाकी

पर्यावरण की फिक्र

डॉ. प्रशांत सिन्हा

पर्यावरणविद

भारत जैसे देश में, जहाँ 70% आबादी कृषि पर निर्भर है, पानी की कमी गंभीर समस्या बन चुकी है। देश के कई शहरों में गर्मियों में नल सूख जाते हैं, भूजल स्तर तेजी से गिर रहा है। प्लास्टिक कचरा नदियों को प्रदूषित कर रहा है, वर्षा जल व्यर्थ बह रहा है। जलवायु परिवर्तन ने सूखे बढ़ाए हैं। 2026 के अंत तक तक 55% भारत पानी-तंग क्षेत्र बनेगा। पानी जीवन का आधार है, पर आज हमारी लापरवाही इसे सूखे की ओर धकेल रही है। हर बूंद सहेजने की आवश्यकता है वरना भविष्य की पीढ़ियाँ तड़पेंगी। नदियाँ लुप्त, कुएँ सुख चुके हैं। जल संरक्षण अब जरूरी है, छोटे प्रयासों से बड़ा बदलाव संभव है। गर्मियां शुरु हो चुकी है। पेयजल की किल्लत भी इसके साथ शुरु हो जायेगी। हालांकि पेयजल की किल्लत तो सालों भर रहता है। जल एक ऐसा तत्व है जिसके बिना जिंदगी की कल्पना भी नहीं की जा सकती। पानी की महत्ता उस प्यासे गले से पूछिए जिसे एक एक बूंद अमृत सरीखी लगती है। कोई भी तरल जल का विकल्प नही बन सका है।

जल से प्रारंभ होकर जल में लीन हो जाने वाले हमारे इस शरीर में लगभग 70 प्रतिशत जल है। इसी पानी के कारण हमारी धरती दूसरे ग्रहों से भिन्न है। धरती पर इंसानियत तभी पनपी क्योंकि वहां अमृत सरीखा पानी प्रचुर मात्रा में था। तो सारा पानी गया कहां? हम इंसान की नासमझी के कारण जल संपदा दिनोंदिन न सिर्फ कम होता जा रहा है, बल्कि प्रदूषित होता जा रहा है। इस संपदा पर आज संकट के बादल मंडरा रहे हैं। चूकि जल पर जीवन निर्भर है इसलिए यह कह सकते हैं कि इसके साथ हमारा जीवन भी संकटग्रस्त होता जा रहा है। यह खतरा दिन प्रतिदिन गहराता जा रहा है। इसकी गंभीरता प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी "मन की बात" कार्यक्रम मे जिक्र करने से लगता है जिसमें उन्होंने जल संरक्षण को एक जन आंदोलन बनाने का सुझाव दिया था। देश में गहराते संकट को देखते हुए मोदी सरकार ने "जल शक्ति मंत्रालय" का गठन किया। एशियाई विकास बैंक के अनुसार भारत में 2030 तक 50 प्रतिशत पानी की कमी होगी। एक आंकड़े के अनुसार दुनिया में 2.2 अरब लोगों को पीने का पानी नहीं मिल रहा है।

भारत में जल प्रबंधन की करीब एक सदी से टिकाऊ राह नही रही है। 1970 तक यहां की जनसंख्या 5.5 करोड़ थी, तब इसका प्रबंधन किया जा सकता था। उस वक्त शहरीकरण एवं औद्योगिकरण कम हुआ था। 2022 भारत की आबादी एक अरब 40 करोड़ के लगभग पहुंच गई। बढ़ती जनसंख्या और शहरीकरण ने जल श्रोतों के अस्तित्व को ही खतरे में डाल दिया है। इसका सीधा असर भूजल स्तर पर पड़ रहा है क्योंकि भूजल स्तर को बढ़ाने में प्राकृतिक जल श्रोत ही सबसे बेहतर माध्यम है। लेकिन शहरीकरण होने से तालाबों को खत्म कर दिया गया है। लेकिन हमें यह समझना होगा कि बेहतर कल के लिए जल संग्रहण बहुत जरूरी है। सभी भवनों में सख्ती से वर्षा जल संग्रहण प्रणाली की व्यवस्था और वर्तमान समय में मौजूद जलाशयों का जीर्णोधार किया जाए तो शहरों में धरा जल से भर उठेगी। नए जलाशयों को विकसित करके एवं मौजूद जलाशयों को पुनर्जीवित कर दिया जाए तो कुछ हद तक पानी की समस्या को समाप्त की जा सकती है।। भवनों में वर्षा जल संग्रहण प्रणाली लगाने का प्रावधान करना और नियम को सख्ती से लागू करने की जरूरत है। सिर्फ फाइलों में नही रहे इसका ध्यान रखना होगा। तमाम छोटे बड़े शहरों में सीवरेज के पानी को देशी ढंग से ट्रीट कर खेती के उपयोग में लाकर बहुत बड़े स्तर पर पानी की बचत किया जा सकता है। सीवरेज के ट्रीट किए पानी को खेतों की सिंचाई के लिए इस्तेमाल करने से फसलों में अतिरिक्त खाद डालने की भी जरूरत नहीं पड़ेगी। साथ ही धरती के नीचे में ट्यूबवेल के जरिए पानी निकालने के लिए खर्च किए जाने वाली बिजली व डीजल की भी बचत होगी। ट्रीट किए पानी खेती के लिए अमृत की तरह है और कुदरती खेती होने से इंसान बीमारियों से भी बचेगा। पानी को दोबारा उपयोग किए जाने से साफ पानी का खजाना हमारे पास सुरक्षित रह सकेगा। फसलों का न्यूनतम समर्थन मूल्य में सबसे महंगी बिकने वाली लेकिन अधिक पानी सोखने वाली फसलों जैसे धान, गेहूं, कपास, गन्ना आदि की खेती करने वाले किसानों को हतोत्साहित करने की जरूरत है। जिन राज्यों में इनकी खेती हो रही है वहां भूजल का स्तर इतना नीचे चला गया है कि नलकूपों से पानी निकालना मुश्किल हो गया है। मगर यह भी सुनिश्चित करना होगा कि विकल्प में किसान जिन कम पानी लेने वाली फसल उगाएं उनका न्यूनतम समर्थन मूल्य किसानों के हक में हो ताकि उन फसलों को उगाने के लिए प्रोत्साहन मिल सकें। शीतल पेय बनाने वाली कंपनियों के भूजल दोहन से भी जल संकट गहराने की खबर है जिसे अविलंब रोकना होगा। सरकारी मदद से नदियों को साफ करना मुश्किल काम नहीं है। देश भर में कार सेवा द्वारा अभियान चलाए जा सकते हैं। नदियों के अलावा तालाबों, छोटी झीलों का भी संरक्षण होना चाहिए। इससे मिट्टी की गाद निकलेगी। इससे उनमें वर्षा जल इकट्ठा होने लगेगा तो भूजल रिचार्ज होने लगेगा। बरसात का पानी की बर्बादी रुकेगी और और बाढ़ नही आएगी। इस पानी को जमा कर फिर से उपयोग में लाया जा सकेगा।

तो आइए, आज से ही संकल्प लें। हर बूंद को संजोएं, हर नदी को बचाएं। कल की प्यासी धरती हमें माफ नहीं करेगी, लेकिन हमारी छोटी-छोटी कोशिशें ही भविष्य को हरा-भरा बना सकती हैं। घर में टपकते नल को ठीक करें, वर्षा जल संचयन अपनाएं और अपने आसपास के समुदाय को जागरूक बनाएं। याद रखें, पानी सिर्फ जीवन का आधार नहीं, बल्कि हमारी सभ्यता की नींव है। "सहेज लो पानी, न रहेगी प्यास बाकी" यह नारा मात्र शब्द न हो, बल्कि हर भारतीय का जीवन-मंत्र बने।

प्रक्रिया और परिणाम के बीच फंसा आधी आबादी का लोकतंत्र

आज की बात

प्रवीण कक्कड़

स्वतंत्र लेखक

इतिहास की तारीखें केवल कैलेंडर के पन्ने नहीं होतीं, वे समाज की आकांक्षाओं का आईना होती हैं। 17 अप्रैल 2026 को संसद के पटल पर महिला आरक्षण की नियमावली और परिसीमन की शर्तों को लेकर जो गहमागहमी और विधायी गतिरोध देखने को मिला, उसने एक बार फिर इस विमर्श को देश के केंद्र में ला खड़ा किया है कि आधी आबादी का हक अब केवल कागजी कानूनों की नहीं, बल्कि तुरंत और ठोस क्रियान्वयन की प्रतीक्षा में है। यह प्रश्न अब केवल जनगणना और परिसीमन की तकनीकी गणनाओं तक सीमित नहीं है, बल्कि यह हमारी राजनैतिक इच्छाशक्ति की वह परीक्षा है जो तय करेगी कि हम प्रतीकों से आगे बढ़कर वास्तविक हक देने के लिए कितने तैयार हैं। हाल के वर्षों की घटनाएं हमें यह याद दिलाती हैं कि महिला आरक्षण का प्रश्न केवल एक विधेयक या कानून तक सीमित नहीं है, बल्कि यह उस अधूरे संकल्प का प्रतीक है, जिसे देश की करोड़ों महिलाएं दशकों से अपने अधिकार के रूप में देख रही हैं। सितंबर 2023 में 'नारी शक्ति वंदन अधिनियम' का पारित होना निस्संदेह एक ऐतिहासिक उपलब्धि थी, लेकिन इसका वास्तविक क्रियान्वयन जनगणना और परिसीमन जैसी प्रक्रियाओं से जुड़ जाना इस प्रश्न को और प्रासंगिक बना देता है- प्रक्रिया शुरू हो चुकी है, लेकिन परिणाम अभी भी प्रतीक्षा में है।

प्रतिनिधित्व का अंतराल और लोकतांत्रिक न्याय

भारत की लगभग 48–49 प्रतिशत आबादी महिलाएं हैं, लेकिन संसद में उनकी हिस्सेदारी अभी भी करीब 15 प्रतिशत के आसपास ही है। यह केवल एक आंकड़ा नहीं, बल्कि लोकतंत्र में मौजूद एक गंभीर 'प्रतिनिधित्व अंतराल' है। जब आधी आबादी नीति-निर्माण में पर्याप्त रूप से उपस्थित नहीं होती, तो लोकतंत्र की आत्मा अधूरी रह जाती है। यह अंतर केवल संख्या का नहीं, बल्कि निर्णय-निर्माण में दृष्टिकोण की कमी का भी संकेत है। आज का केंद्रीय सवाल यही है जब एक महिला गांव की चौपाल और पंचायत का कुशल संचालन कर सकती है, तो वह देश की संसद में नेतृत्व करने के लिए किसी भविष्य की गणना का इंतजार क्यों करे? भारतीय महिलाएं अब इस अधिकार को किसी राजनीतिक दल के 'वादे' के रूप में नहीं, बल्कि अपनी नेतृत्व क्षमता पर राष्ट्र के विश्वास के रूप में देखना चाहती हैं।

स्थानीय निकायों से मिला नेतृत्व का पाठ

स्थानीय निकायों का अनुभव इस विश्वास को मजबूत करता है। 73वें और 74वें संविधान संशोधनों के बाद आज देश में 14 लाख से अधिक निर्वाचित महिला प्रतिनिधि सक्रिय हैं, और कई राज्यों में यह भागीदारी 50 प्रतिशत तक है। इन संस्थाओं में महिलाओं की उपस्थिति ने शासन की प्राथमिकताओं को बदला है, पानी, स्वच्छता, शिक्षा और स्वास्थ्य जैसे मुद्दे अधिक मजबूती से सामने आए हैं। हालांकि, इसी स्तर पर 'प्रधान-पति' जैसी प्रवृत्तियां भी देखने को मिली हैं, जो यह संकेत देती हैं कि केवल सीट देना पर्याप्त नहीं है; समाज को महिलाओं की स्वतंत्र निर्णय क्षमता को भी स्वीकार करना होगा। संसद और विधानसभाओं में आरक्षण का वास्तविक अर्थ तभी होगा जब यह प्रतीकात्मक (Tokenism) नहीं, बल्कि वास्तविक शक्ति में बदले।

समानता बनाम न्यायः एक जरूरी स्पष्टता

महिला आरक्षण को लेकर एक आम भ्रम यह है कि यह 'समानता' का नहीं, बल्कि 'विशेषाधिकार' का विषय है। जबकि वास्तविकता इसके ठीक विपरीत है। यह मुद्दा समानता से अधिक न्याय का है। भारतीय समाज की संरचना में महिलाओं के सामने मौजूद सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक बाधाएं, चाहे वह आर्थिक निर्भरता हो, पारिवारिक जिम्मेदारियां हों या राजनीतिक नेटवर्क की कमी- उन्हें समान अवसर से वंचित करती हैं। ऐसे में आरक्षण कोई अतिरिक्त लाभ नहीं, बल्कि उस असंतुलन को संतुलित करने का संवैधानिक माध्यम है। यह 'कोटा' नहीं, बल्कि 'लेवल प्लेइंग फील्ड' तैयार करने का प्रयास है।

वैश्विक संदर्भ और भारत की स्थिति

वैश्विक परिप्रेक्ष्य में देखें तो कई देशों- जैसे रवांडा, नॉर्वे और फ्रांस ने महिला प्रतिनिधित्व को 30 से 50 प्रतिशत तक पहुंचाकर शासन की गुणवत्ता में उल्लेखनीय सुधार किया है। भारत, जो दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र है, इस मामले में अभी भी पीछे है। यह अंतर केवल आंकड़ों का नहीं, बल्कि विकास की प्राथमिकताओं और दृष्टिकोण का भी है। यदि भारत को वास्तव में 'विकसित राष्ट्र' बनने की दिशा में आगे बढ़ना है, तो उसे अपनी आधी आबादी को नीति-निर्माण में समान भागीदारी देनी ही होगी।

संवेदनशील नीति-निर्माण और सामाजिक प्रभाव

महिलाओं की भागीदारी का सबसे बड़ा प्रभाव नीति-निर्माण में दिखाई देता है। जब निर्णय लेने वाली मेज पर महिलाएं होती हैं, तो नीतियां अधिक संवेदनशील और समावेशी बनती हैं। महिला सुरक्षा, मातृत्व स्वास्थ्य, शिक्षा, पोषण और सामाजिक कल्याण जैसे विषयों को प्राथमिकता मिलती है। यह केवल महिलाओं के लिए नहीं, बल्कि पूरे समाज के लिए सकारात्मक परिवर्तन लाता है क्योंकि एक महिला का निर्णय अक्सर परिवार, समाज और आने वाली पीढ़ियों तक प्रभाव डालता है।

राजनीतिक इच्छाशक्ति और सामाजिक परिवर्तन

यह भी उतना ही महत्वपूर्ण है कि महिला आरक्षण को केवल संसद तक सीमित न रखा जाए। राजनीतिक दलों के भीतर भी महिलाओं को नेतृत्व के अवसर देने होंगे। यदि दलों की आंतरिक संरचना पुरुष-प्रधान बनी रहेगी, तो आरक्षण का उद्देश्य अधूरा रह जाएगा। सरकार और विपक्ष दोनों की साझा जिम्मेदारी है कि वे इसे केवल एक विधायी उपलब्धि के रूप में न देखें, बल्कि इसे एक व्यापक सामाजिक परिवर्तन के रूप में आगे बढ़ाएं। यह मुद्दा किसी एक विचारधारा का नहीं, बल्कि संपूर्ण भारतीय समाज के भविष्य का है।

अब प्रतीक्षा नहीं, परिणाम चाहिए

आज की भारतीय महिला ने अंतरिक्ष से लेकर सेना, विज्ञान से लेकर उद्यमिता तक हर क्षेत्र में अपनी क्षमता सिद्ध की है। वह अब केवल 'वोटर' नहीं, बल्कि 'लीडर' के रूप में अपनी पहचान चाहती है। यह मांग किसी के खिलाफ नहीं, बल्कि अपने अधिकार के पक्ष में है। अंततः, यह सवाल अब 'कब' का नहीं, बल्कि 'क्यों अभी तक नहीं' का हो चुका है। महिला आरक्षण अब किसी सरकार की उपलब्धि या विपक्ष का एजेंडा नहीं है; यह भारत के लोकतांत्रिक भविष्य की अनिवार्य शर्त है। समय आ गया है कि हम तकनीकी प्रक्रियाओं से आगे बढ़कर परिणाम की ओर बढ़ें। क्योंकि लोकतंत्र की असली ताकत उसकी समावेशिता में होती है और भारत का लोकतंत्र तब ही पूर्ण होगा, जब उसकी आधी आबादी केवल दर्शक नहीं, बल्कि निर्णय-निर्माता बनेगी।

आस्था का दिव्य महाकुंभ
पूरा विश्व देखेगा उज्जैन का वैभव

नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री

30 करोड़ श्रद्धालुओं का स्वागत उज्जैन नगरी का हो रहा अभूतपूर्व कायाकल्प

सुगम आवागमन ₹ 13,536 करोड़ से 581 कि.मी. मार्गों का चौड़ीकरण एवं निर्माण कार्य प्रगतिरत

पुल निर्माण ₹440 करोड़ के निर्माण से यातायात का बेहतर प्रबंधन

शुद्ध जल क्षिप्रा के लिये ₹ 919 करोड़ लागत की कान्ह क्लोज्ड डक्ट परियोजना एवं शहर में पेयजल आपूर्ति हेतु ₹1113 करोड़ के कार्य जारी

घाट निर्माण लगभग 29 कि.मी. घाटों का निर्माण जारी

ज़ीरो वेस्ट इवेंट जन भागीदारी से ज़ीरो वेस्ट इवेंट बनाने की पहल

मंदिरों का जीर्णोद्धार सभी पौराणिक मंदिर जैसे हरसिद्धि, गढ़कालिका का विकास

आधुनिक तकनीक से प्रबंधन भीड़ नियंत्रण से लेकर ट्रांसपोर्ट और कंट्रोल रूम तक एआई का उपयोग

कनेक्टिविटी विश्वस्तरीय उज्जैन हवाई अड्डा और सदावल में 4 हेलीपैड का निर्माण कार्य जारी

उज्जैन बनेगा मेडिकल हब ₹ 592.30 करोड़ लागत से मेडिसिटी एवं मेडिकल कॉलेज निर्माणाधीन

R.O. No. : D19005/26

"सिंहस्थ महापर्व 2028 करोड़ों भक्तों को सरल, सुलभ और नवीनतम सुविधाओं से युक्त विश्व-स्तरीय कुंभ का अनुभव प्रदान करना हमारा संकल्प है।"

- डॉ. मोहन यादव
मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक विजया पाठक द्वारा जेयन आफसेट वर्क्स, पुल बोगदा भोपाल 462023 (मप्र) से मुद्रित तथा एफ-116/17, शिवाजी नगर, भोपाल (मप्र) से प्रकाशित। **संपादक : विजया पाठक।**
RNI-MPBIL/2011/39805 समाचार चयन के लिए पी.आर.बी. एक्ट के तहत जिम्मेदार। (सभी विवादों का न्यायक्षेत्र भोपाल रहेगा।)